Chapter-4

अध्याय : 4

आर्थिक समस्याएँ

अध्याय : 4

आर्थिक समस्याएँ

यह तो एक सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक युगका सामाजिक, राजनीतिक, तथा सांस्कृतिक जीवन अर्थ-सत्तासे प्रभावित एवं संचालित होता रहा है। आधुनिक चेतना की व्यक्तिपरक दिशाओं के मूलमें भी अर्थ-प्रक्रिया ही काम कर रही है। हमारी बहुत-सी सामाजिक समस्याओं के उत्स में भी अर्थगत विषमता को लक्षित किया जा सकता है। विभिन्न सामाजिक संघर्षों एवं राजनीतिक समस्याओं का मूल कारण किसी-न-किसी प्रकार से अर्थ से ही सम्बन्धित रहा है। आजकल सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विभिन्न वर्णों के स्थान पर वर्गों का जो उदय हो रहा है, उसका मूलाधार भी अर्थ-व्यवस्था है। आर्थिक दृष्टया आत्म-निर्भर होने पर आधुनिक नारी में स्वावलंबन की भावना उभर रही है। नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व के मूल में भी उसकी अर्थ-आत्म-निर्भरता ही मुख्य है।

"अमृत और विष" में आर्थिक जटिलताओं के परिणामस्वरूप कुंठित, विद्रोही एवं विकृत होते हुए नौजवान की वैयक्तिकता से परिचय कराते हुए नागरजी लिखते हैं :-- "मेरे सामने कुँठित नौजवान भारत बैठा था, जो बेकार है, दरिद्रता से नफ़रत करता है, उन्नतिशील जीवन चाहता है और न मिलने पर, दुत्कारे जाने पर अपने कुंठित आत्मसम्मान के लिए जीवन सुरक्षा के लिये कितना अविवेकी, क्षुद्र और अन्धस्वार्थी हो जाता है। यह अभी अपराधी नहीं, विकृत विद्रोही-भर है।"[1]

नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास भी उसके आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने पर हुआ है । "टेराकोटा" की मिति आई•ए•एस• आफिसर होकर कमिश्नर के पद पर पहुँच गई हैं । अब वह न केवल आत्म-निर्भर है, पर अनेकों को बनानेका एक दर्पयुक्त अहसास भी उसके साथ है । इस अहसास से उसका आत्मविश्वास भी बढ़ा है । "पचपन खम्भे लाल दीवारें" की सुषमा भी आर्थिक दृष्टया स्वतंत्र है । "अनदेखे अनजान पुल" की निन्नी की कुरूपता-विषयक लघुताग्रंथि का परिहार भी उसकी आर्थिक - आत्म - निर्भरता में होता है । "अन्धेरे बन्द कमरे" की नीलिमा और सुषमा, "आपका बण्टी" की शकुन, "अन्तराल" की श्यामा, "रुकोगी नहीं .... राधिका" ? की राधिका, "वे दिन" की रायना, "कृष्णकली" की कली प्रभृति नारियों के स्वतंत्र व्यक्तित्व के निर्माण में आधुनिक शिक्षा जनित आत्म-अर्थ निर्भरता मुख्य है । स्त्रीके इस स्वतंत्र व्यक्तित्व को लक्ष्य करके डॉ• नेमिचन्द जैन लिखते हैं -- "व्यक्तिगत स्वाधीनता और व्यक्तित्व की अद्वितीयता जैसी अवधारणाओं का विस्तार अब हमारे देशमें केवल पुरूषों तक सीमित नहीं रह गया । उचित ही है कि स्त्री भी अपने व्यक्तित्व और उसकी रक्षा तथा प्रतिभा के प्रति सजग होती जा रही है । देशमें सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर नारी के पुरूषके समकक्ष होनेकी प्रक्रिया के अनुरूप ही पिछले वर्षों में साहित्य में भी नारी के व्यक्तित्व को अपेक्षाकृत भिन्न प्रकारकी अभिव्यक्ति मिली है ।"[2]

इस आर्थिक - निर्भरता से स्त्री को जहाँ एक स्वतंत्र व्यक्तित्व मिला है, वहाँ एक दूसरे तरीके से उसका शोषण भी शुरू हो गया है जिसका विवेचन - विश्लेषण पूर्ववर्ती अध्याय में हो चुका है । आर्थिक विषमताओं

और समाजमें आर्थिक असंतुलन के कारण विभिन्न वर्गों की सृष्टि होती है । इस आर्थिक असंतुल न का सबसे बुरा प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ता है । कोई मध्यवर्गीय व्यक्ति इस अर्थ - सत्ता के सामने जब टूटने लगता है तब समूची आस्था - संहिति चरमराने लगती है । "यह पथ बंधु था" के मध्यवर्गीय श्रीधर की टूटन के सम्बन्ध में डॉ॰ रामदरश मिश्रने लिखा है -- "पैसा शोषणका अस्त्र है, वह चाहे प्रकाशक के हाथमें हो, चाहे स्वाधीनता की लड़ाई लड़नेवाले ठाकुर साहब जैसे तपे हुए नेताके हाथमें, वह शोषण का अस्त्र बार-बार श्रीधर जैसे ईमानदार, असमझौतावादी, स्वप्नदर्शी व्यक्ति को तोड़ता है और श्रीधर अन्त में पाता है कि वह हारा हुआ, टूटा हुआ आदमी बनकर शेष रह गया है ।"[3]

आर्थिक असंतुलन अर्थगत-कुण्ठा को भी जन्म देता है । "अन्धेरे बन्द कमरे" का बुद्धिजीवी पत्रकार मधुसूदन कुमारी शुक्लाको चाहने पर भी उसे पाने का साहस नहीं जुटा पाता । विवाहितजीवन एक दूसरे का पूरक मानने पर भी सुषमा की इच्छाको ओछी बात कहकर टाल देने के पीछे अर्थगत विषमता ही कारणभूत है । "गोबर गणेश" का विनायक शान्तम को चाहते हुए भी नहीं पा सकता । यदि आर्थिक दृष्टि से वह संपन्न होता तो उसका प्रेम विकलता को प्राप्त न होता ।

तात्पर्य कि मानव-जीवन के सभी कार्य-कलापों सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों, वैयक्तिक चेतना, वर्गीय चेतना प्रभृति सभी पर अर्थ-सत्ताका प्रभाव है । ऊँची शिक्षा, जन कल्याणकारी राज्य, और सारे आदर्शों के बावजूद "गोबर गणेश" के विनायकऔर जगन बुरी तरह से असफल रहते है ।

इस सम्बन्ध में डॉ॰ विवेकीराय का यह मत चिंतनीय है -- "विनायक में आदर्शवादी महत्त्वकांक्षा और नेतृत्वकी संभावनाओं की कमी बीज रूप से कहीं ही हीन नहीं है । हीन है उसकी नियति, जो गरीबी से जुड़ी है । इस देशका गरीब आदमी चाहे वह कितना प्रतिभाशाली क्यों न हो, उड नहीं सकता । इस वर्गके संस्कार, भाव, पारिवारिक परिवेश, सम्बन्ध और समग्र जीवन पर ही हीनत्व की वह सर्वग्रासिनी अभिशप्त छाया पड़ी रहती है कि उससे उबरना दुष्कर है ।"[4]

"राग दरबारी" उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने हमारे मध्यवर्गीय चरित्र को लक्ष्य करके लिखा हैं -- "हमारा देश भुनभुनानेवालों का देश है, यही हमारी युग चेतना है ।"[5] परन्तु इसमें मध्यवर्गका दोष नहीं है । दो पाटों के बीच पीसनेवाला यह वर्ग आर्थिक दष्टि से इतना टूटा हुआ और असमर्थ है कि सिवाय भुनभुनाने के वह कुछ नहीं कर सकता ।

गरीबी की समस्या :

निर्धनता एक सामाजिक एवं आर्थिक समस्या है । इसकी उत्पत्ति और स्वरूप जटिल है । विश्व के सम्मुख गरीबी की समस्या एक सामाजिक,नैतिक और बौद्धिक चुनौती है । गरीबी एक सर्वव्यापी समस्या है और समृद्ध देश भी इसकी चपेट से नहीं बच सके हैं । विश्व में गरीब देशों की संख्या इतनी है कि उन्हे "तीसरी दुनिया" के नाम से पुकारा जाता है । तीसरी दुनिया के लोगों को अच्छा भोजन, वस्त्र एवं मकान उपलब्ध नहीं है । भारत में भी कई ऐसे परिवार हैं जो औसत दर्जे का जीवन भी व्यतीत नहीं कर पाते । वे गरीबी से भयंकर रूप से पीड़ित है । वे सडको और फुटपाथों पर अपना दम तोड़ते हैं, भीख माँगकर अपना जीवन व्यतीत करते है तथा लोगों की दया

पर ही जीवित रहते है । ऐसी गरीबी भूख और मौत को जन्म देती है । आज गरीब और अमीर के बीच एक बहुत बड़ी खाई दिखायी देती है । इस विषमता और गरीबी की समस्या को जन्म देने में औद्योगीकरण का विशेष हाथ रहा है । इस आद्योगीकरण और मशीनरीकरणने जहाँ एक ओर समाज में प्रचुर साधन उपलब्ध कराये हैं और समृद्धि को बढ़ावा दिया है, वही दूसरी ओर एक तीसरी दुनिया भी खड़ी कर दी है जो गरीबी और अभावों से ग्रस्त है । बढ़ती हुई जनसंख्या, बेकारी, सामाजिक, कुप्रथाएँ, अज्ञानता और अशिक्षा, आलस्य और निष्क्रियता, सुधार नीतियों की असफलता तथा औद्योगीकरण और पूंजीवाद आदि कारणों से यह गरीबी बढ़ती ही जा रही है ।

जगदम्बाप्रसाद दीक्षित के उपन्यास "मुरदाघर" में निम्न से भी निम्न वर्ग के झोपड़पट्टी के दुझते कोढ़युक्त जीवन की भीषण गरीबी का बेबाक चित्रण मिलता है । नियोन लाइट से जगमग सफेद इमारतोंवाली सफेदपोश वस्तीकी विसदृशता (Contrast) में बम्बई की एक गन्दी, घिनौनी, सड़ांध से भरी झोपडपटी की सच्ची यथार्थ तस्वीर को लेखकने इस खूबी से उभारा है कि हमारे सभ्य समाज की परत-दर-परत खुलती गई है । महानगरों की इमारतों के समान्तर फुटपाथों पर लाखों-करोडों मनुष्य बसते हैं, जो कुत्तों, कौवों और रेंगते हुए कीडों सें भी बदतर जिन्दगी बसर करते हैं और जिन्हें समाज की जूठन और गन्दगी के अतिरिक्त कुछ समझा नहीं जाता ।[6]

इस उपन्यास मे एक-एक दो-दो रूपये, कई बार अठन्नी या चाय-ठर्रा के एक-एक कप के लिए शरीरका सौदा करनेवाली, खड़ियाके पावड़र से

चेहरों को छीपनेवाली, ग्राहक के लिए एक-दूसरे पर झपटनेवाली तथा गाली-गलौच करनेवाली मैना, पार्वती, मरियम, बशीरन, जमीला जैसी वेश्याओं का यथार्थ चित्रण उनकी ही शैली व भाषा में किया गया है ।

इसमें मिकदार गन्दगी पर भिन-भिनाती मक्खियों जैसे गन्या, राजू, मूहम्मद, गोपू, सोन्या जैसें बच्चे हैं जो होटल के उच्छिष्ट कमरे में रोटी पाऊँ या हड्डी के एकाध टुकडे के लिए आपसमें झपटते हैं । पेटकी यह दोहरी आग उन्हें कोढ़ियों और भिखारियों की पंक्तिमें लाकर खड़ा कर देती है । क्रूर नियति के थपेडों ने उनके आनंद प्राप्ति के मार्ग को भी क्रूर बना दिया है । वस्त्रा भाव में एकांत स्नान लेते असहाय दीन-हीन मनुष्य पर पत्थर फेंकने में उन्हें बूढ़े अन्धे भिखारी पर पत्थर फेंकने से भी अधिक आनन्द आता है -- "भौत मज़ा आया आज .... सच्ची बोलता यार । अइसा मज़ा तो वो अंधे बुड्ढे कू फत्तर मारने में भी नई आता । कायकू ... ... अपुन वो दिन वो कुत्ते कू पानी में डुबा के मारा था ना ..... पन इतना मजा मई आया । नई क्या .... ।"[7]

बच्चे के जन्म पर यहाँ खुशी नहीं मातम मनाया जाता है, क्योंकि नवागत शिशु उनके व्यवसाय के कपाटों को क्रूरता से बन्द कर देता है ।[8] मरियम को पुत्र-प्राप्तिका आनंद नहीं, क्योंकि पेट की आगने मातृत्वकी ममता के समुद्र को सोख लिया है । बशीरन अपनी वृद्धावस्था के लिए चिन्तित है क्योंकि तब पुलिसवाले उसे पकड़ेंगे नहीं और जो कभी-कभी बीस-पच्चीस दिन अच्छा खाना मिल जाता है, वह भी नसीब नहीं होगा । उसके ही शब्दों में -- "दो सालके अदर वो टैम आ जाएगा मेरा ....कि

हवलदार लोग पकड़ें गाय नई मेरे कू । इधर रहके महीना बीस दिन जो चैन से खाने कू मिलता है बैइ के ····· वो भी नई मिलेंगा । तब क्या होंगा मेरा ? सोचती तो सर में चक्कर आने लगता ।"[9] गरीबी और भूखमरी के कारण कुछ लोग हिजड़े न होते हुए भी हिजड़े बन जाते हैं। लक्ष्मी इसी प्रकार का हिजड़ा हैं -- "मैं हिजड़ा नई पन काम नई मेरे कू कुछ । पइसा नई । करके मैं आ गया कमला बिमला के साथ । भीक मॉंगने से तो येव ठीक ।"[10]

मुरदाघर में कटे हुए पोपट के शव को देखने के लिए उसकी पत्नी मैना के साथ जाने वाली वशीरन को वापिस लौटकर ग्राहक को शीघ्र पकड़ने की चिंता है, क्योंकि तभी उसके दोपहर का खाना जुट पाएगा ।

"नदी फिर बह चली" में पटना की गन्दी खोलियों में चलनेवाली सस्ती वेश्यागीरी का जीवन्त चित्रण मिलता है । यहाँ "कमलवा" हो चाहे "सरदावा" हर "माल" दो रूपये चार आने मिलता है । पुआल पर टाट और तकिये के बदले में हर बिछावन पर एक-एक ईंट । रात होती है तो माटी के बने ताखे पर माटी का दीया जल जाता है । सुबह से रात के दस बजे तक यह काम चलता रहता है ।[11]

मोहन राकेश कृत "अन्धेरे बन्द कमरे" में भी दिल्ली की कस्साबपुरा जैसी गन्दी भिनकती बस्ती मिलती है । जहाँ लोग कीड़े-मकोडों की तरह रह रहे हैं ।

महेरून्निसा परवेज के उपन्यास "कोरजा" में निम्न मध्यवर्गीय मुसलमान परिवारों की भीषण गरीबी का चित्र मिलता है । मुनीम के यहाँ

गिरवी रखा हुआ मकान कुर्क न हो जाय इसके लिए साजो को जुम्मनखाँ मुनीमकी अनुचित माँगों को बजाना पड़ता है । हररोज रातको वह साजो को बुलाता है और नंगी करके उसके साथ मनमानी करता है ।

गरीबी की समस्या से मध्यवर्ग भी पीड़ित है । किन्तु यहाँ गरीबी का स्वरूप दूसरे प्रकार का है । "अमृत और विष" के रमेश को अपनी बहन के विवाहमे उच्च वर्गकी बराबरी के निमित्त अपनी आर्थिक स्थिति से अधिक खर्च करना पड़ता है । इस सम्बन्ध में वह कहता है -- "इन कैपीयलिस्टों के कम्पिटीशन में हम जैसों की मिट्टी पलीय हो गई है ।"[12]

निम्न मध्यवर्ग की दारूण आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए "सुखदा"[13] का लाल उचित ही कहता है :- "तुम लोगोंकी आय सीमित है और खर्च को आय के अन्दर रखना तुम्हारे वर्ग में धर्म माना जाता है । यह एक ठकोसला है । बच्चेको दूध न मिले, शिक्षा न मिले । खुद, पूरी खुराक न लीजिए और कोशिश हो कि सन्तोष रखें । यह इतना बड़ा झूठा विचार समाज में चला दिया है कि जो हमारी मध्यम वर्ग की श्रेणीको भीतरसे खाये जा रहा है । ऊपर से इज्जत रखनी पड़ती है, भीतर से सन्तोष रखना पड़ता है । इस द्वन्द्व से जिन्दगी फटी जा रही है ।"[14]

"शहर में घूमता आईना" , "आधा गाँव", "लौटती लहरों की बाँसुरी" "गोबर गणेश", "किसलिए", "एक चूहे की मौत", "तीसरा आदमी", "टूटे हुए - सूर्य"बिम्ब", प्रभृति उपन्यासों में मध्यवर्गीय लोगों के आर्थिक संकटों को निरूपित किया गया है । पानु खोलिया के उपन्यास "टूटे हुए सूर्य-बिम्ब" में मध्यवर्गीय लोगों की प्रदर्शनवृत्ति को रेखांकित किया गया है । नरेश और कौशल क्रमश: हिन्दी और अंग्रेजी के प्राध्यापक हैं ।

बीवी तंत्र के शिकार होकर दोनों मध्यवर्गीय प्रदर्शन-वृत्तिमें अलग-अलग ढंगसे ऐसे जुटते हैं कि उनका अपना व्यक्तित्व टूटकर बिखर जाता है । कौशल बाहरी शानो-शौकत को बरकरार रखने के लिए नोट्स लिखता है । नरेश घर, समाज और बच्चों के लिए अपने को खपा देता है । अपने व्यक्तित्व और आत्मा को मारकर वे जिन्दगीके इस जुए को ढोने के लिए विवश हैं । "गोबर गणेश" का विनायक "शहर में घूमता आईना" का चेतन और "लौटती लहरों की बांसुरी" का अशोक प्रतिभा संपन्न होते हुए भी मध्य-वर्गीय अर्थ-संकट की आपाधापी में पड़कर अपने मनोनुकूल व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाते, फलत: तीनों का व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है ।

बेकारी (Unemployment) की समस्या :

शहरों में गरीबी से जुड़ी हुई एक समस्या बेकारी की है । नगरीकरण की प्रक्रिया, बढ़ती हुई जन-संख्या, शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण यह बेकारी का प्रश्न दिन-व-दिन भीषण होता जा रहा है । आज विश्व के अनेक देशों को बेकारी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है । यह समस्या न केवल औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों की है, बल्कि संपन्न देशों मे भी अब यह समस्या बढ़ रही है । औद्योगिकरण के पूर्व बेकारी केवल कृषि-क्षेत्र तक ही सीमित थी, औद्योगीकरण के फलस्वरूप अब बेकारी कृषि के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी पायी जाती है । औद्योगीकरण ने पूँजीवाद के विकास एवं सम्पति के असमान वितरण में योग दिया और साथ ही समाज में आर्थिक एवं सामाजिक विषमता को बढ़ावा भी दिया ।

बेकारी के सन्दर्भ में निम्नलिखित कतिपय बातों को समझ लेना भी आवश्यक है ।

:1: इच्छा : किसी भी व्यक्ति को बेकार उस समय कहा जायेगा जब वह काम करनेकी इच्छा रखता हो, पर उसे काम न मिले ।

:2: योग्यता : केवल काम करने की इच्छा ही पर्याप्त नहीं है, उस कामके लिए वांछित योग्यता भी उसमें होनी चाहिये । ऐसे योग्य व्यक्ति को यदि काम न मिले तो वह बेकार कहलायेगा ।

:3: प्रयत्न : इच्छा और योग्यता के उपरांत व्यक्ति को काम ढूँढने के लिए प्रयत्न भी करना पड़ता है । अनेक प्रयत्नों के बावजूद जब उसके योग्य कोई काम नहीं मिलता, तब वहाँ बेकारीकी स्थिति मानी जायेगी ।

:4: योग्यता के अनुसार पूर्ण काम : यदि एक व्यक्ति को जिस कार्य एवं पद के लिए वह योग्य है, उस कार्य एवं पद से कम की उपलब्धि होती है, तब भी उसे पूर्ण रोज़गार प्राप्त व्यक्ति न कहकर आंशिक रोजगार प्राप्त व्यक्ति कहेंगें ।

उदाहरण के लिए एक इंजीनियर को ओवरसीयर, प्रोफेसर को स्कूल-टीचर और स्कूल-टीचरको प्रि-प्राइमरी में काम करना पडे और तदनुसार वेतन भी कम मिले तो इस स्थिति को भी आंशिक बेरोजगारी के अंतर्गत रखा जायेगा ।

नगरीय क्षेत्रमें बेकारी ﴾ Urban unemployment ﴿ हमें दो रूपों मे मिलती है -- ﴾1﴿ औद्योगिक क्षेत्रमें, ﴾2﴿ शिक्षित वर्ग में । औद्योगिक क्षेत्रमें बेकारी के अनेक कारण हैं, जैसे गाँवों से व्यवसायकी खोज में लोगोका औद्योगिक केन्द्रोंकी ओर आना, किन्तु धीमी औद्योगिक प्रगति के कारण उन्हें रोजगार न मिलना, अनियोजित औद्योगिकरण, आर्थिक प्रति स्पर्द्धा के

कारण बाजार में वस्तुओं की माँग, की कमी, मजदूरों की छँटनी, उद्योगों में अभिनवीकरण के कारण मानव-शक्तिका स्थान जड़ मशीनों द्वारा ले लेना; हडतालों व तालाबंदी के कारण कारखानों का बन्द हो जाना आदि-आदि ।

शिक्षित बेकारों में उन्हीं लोगों को सम्मिलित किया जाता है जो मैट्रिक या उससे अधिक शिक्षाग्रहण किए हुए हैं । शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ इन शिक्षित बेकारों में निरन्तर वृद्धि हो रही है । शिक्षित बेकारी के लिए आंशिक रूप से हमारी शिक्षा-प्रणाली भी उत्तरदायी है जो केवल पुस्तकीय ज्ञान तो देती है, किन्तु व्यवसायलक्षी शिक्षा नहीं देती । हमारे शिक्षित व्यक्ति भी केवल वेतनभोगी सेवाएँ (White Collar Job) चाहते हैं । कई बार उनमें उद्यमशीलता और साहसिकता का अभाव पाया जाता है । एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् 1961 में 28,000 स्नातक एवं तकनीकी व्यक्ति रोजगार की खोज में थे जो सन् 1971 में बढ़कर 2,88,487 हो गये । इनमें 81 % पुरुष और 18.9 % स्त्रियाँ थीं ।[15]

नगरीय परिवेश के उपन्यासों में बेकारी की इस समस्या का समुचित आकलन हुआ है । "अन्धेरे बन्द कमरे", "टेराकोटा", "एक टूटा हुआ आदमी", "कृष्णकली", "डाक बंगला", "शहर में घूमता हुआ आईना", "एक चूहे की मौत", "नंगा शहर", "यह भी नहीं", "कुरु-कुरु स्वाहा", "छाया मत छूना मन", "कथा-सूर्यकी नयी यात्रा", "राग दरबारी", "दिल एक सादा कागज" प्रभृति कई उपन्यासों मे बेकारी की इस भीषण समस्या के विषैले प्रभावों को चित्रित किया गया है । बेकारी के कारण लोगों का आर्थिक व नैतिक शोषण भी होता है । कई बार ज्यादा वेतन

पर हस्ताक्षर करवाकर कम वेतन दिया जाता है । महिलाओं को नोकरी के लिए कई बार नैतिक मूल्यों का बलिदान करना पड़ता है । "पचपन खम्भे लाल दीवारें" की सुषमा, "टेराकोटा" की मिति या "आपका बण्टी" की शकुन जैसी कुछ ही महिलाएँ होती हैं जिन्हें सम्मान की नौकरी मिलती है । अधिकांशतः उन्हें अपने स्थानों को सुरक्षित रखने के लिए पुरुष की काम-डोरी से संचालित होना ही पड़ता है ।

"छाया मत छूना मन" की वसुधा के स्टेप - फाधर रिटायर्ड होकर चारपाई पकड़ लेते हैं । ग्रेजुएट वसुधा नौकरी के लिए निकलती है, परंतु शुरू में उसे निराशा ही हासिल होती है । हर जगह No vacancy का बोर्ड लगा हुआ है । उसके सामने जो धृणित प्रस्ताव आते हैं उससे उसका संपूर्ण व्यक्तित्व हिले जाता है । एक बार उसे कहा जाता है कि "तुम्हें सारे कपड़े उतारकर फोटू खिंचवानी पड़ेगी" ।[16] इस प्रस्ताव को सुनकर वह रो पड़ती है ।

"डाक बंगला" को इरा को नौकरी के अतिरिक्त मि॰ बतरा की अंक शायिनी भी होना पड़ता है । "कृष्णकली की वाणी सेन को स्कूल में अध्यापिका होने के कारण स्कूलके मेनेजर रजनीकान्त मित्रा की "भतीजी बनकर उसकी काम-वासना का शिकार होना पड़ता है ।

हर तरह से योग्य होते हुए भी "गोबर गणेश" के जगन को स्कूल - अध्यापक की नोकरी नहीं मिलती और गरीबी व क्षय की बीमारी में वह दम तोड़ देता है ।

"राग दरबारी" का रंगनाथ यूनिवर्सिटी के शोधकार्य को "घास खोदना"[17] कहता है क्योंकि प्रायः अधिकांश अनुसंधित्सु, बी॰ए॰एम॰ए॰ के बाद नौकरी

न मिलने के कारण एक प्रारंभिक take off के रूपमें उसे स्वीकार करते हैं । जब तक नौकरी न मिले, तब तक यू•जी•सी• की स्कालरशीप के पैसे हथियाने का यह सर्वोत्तम उपाय है । इसी उपन्यासमें छंगामल इण्टरमीडिएट कॉलेज से मास्टर खन्ना और मालवीय को बुरी तरह से निकाला जाता है । प्रिंसिपल खन्नावाली जगह के लिए रंगनाथ से बात करते हैं, तब रंगनाथ के यह कहने पर कि "मैं आपके यहाँ मास्टरी करूँगा ? और वह भी खन्ना की जगह । ..... मैं जानता हूँ कि खन्ना को यहाँ से कैसे निकाला गया है ...... ।"[18] प्रिंसिपल साहब रंगनाथ से जो कहते हैं वह बहुत ही सूचक है -- "इससे कहाँ तक बचोगे बाबू रंगनाथ । जहाँ जाओगे, तुम्हें किसी खन्ना की ही जगह मिलेगी ।"[19]

कई बार व्यक्ति को प्रतिभा और शक्ति के अनुरूप कार्य नहीं मिलता । आजीविका की प्राप्ति हेतु उसे कुछ भी करना पड़ता है । साहित्य में एम•ए• या विज्ञान में एम•एस•सी• करने वालों को क्लर्की जैसा प्रतिभानाशी कार्य करना पड़ता है । बदी उज्ज़माँ के उपन्यास "एक चूहे की मौत" में समस्या के इस पहलू को दर्द के साथ उकेरा गया है । व्यवस्थाके साँचे में ढलकर सभी एक से हो जाते हैं -- बिना चेहरे के, बिना व्यक्तित्व के । अत: उपन्यास में पात्रों को नाम नहीं दिया गया है । "ग" चित्रकार है, पर उसे क्लर्क का कार्य करना पड़ता है । "कुरु कुरु स्वाहा" के खलीक को भी अपनी प्रकृतिके विरुद्ध कार्य करना पड़ता है । "दिल एक सादा कागज़" के रफ्फन में साहित्यकार की प्रतिभा है । परंतु बम्बई की फिल्म इण्डस्ट्री में उसे लेखक का काम मिलता है, जहाँ लेखक को मुंशी

कहा जाता है और उसे अदाकारों के इशारों पर नाचना पड़ता है । कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति वहाँ टीक नहीं सकता । एक स्थान पर हीरो कहानी के किसी सीन की बात करता है । वह सीन किसी लिहाज़ से गजबका नहीं था । हिन्दी की लगभग हर फ़िल्म में होता है, चाहे बम्बई में बने या मद्रास में । पर तारीफ़ तो करनी ही थी, "क्योंकि यह बात एक बड़ा हीरो कह रहा था । यह बात बड़े हीरो के सेक्रेट्री या उसकी कीप के भाई या पिम्पने कही होती तब भी लेखक ने यूँ ही लहककर तारीफ़ की होती क्योंकि उसे एक कहानी बेचनी थी । कहानी बेचनी थी क्योंकि उसे पैसों की सख्त जरूरत थी । पैसों की उसे सख्त जरूरत थी क्योंकि उसे बनिये का तीन महीने का हिसाब चुकाना था । बनिये का हिसाब चुकाना था क्योंकि उसने उधार देने को इन्कार कर दिया था ।"[20]

"मुरदाघर" के जब्बार को चोरी करनी पड़ती है क्योंकि उसे कोई काम नहीं मिलता । काम नहीं मिलने से कुछ लोग हिज़ड़े तक बन जाते है, वास्तव में वे हिजड़े होते नहीं है । लक्ष्मी इसी प्रकार का हिजड़ा है ।

"अंतराल" में वर्णित मण्डी स्कूल की अध्यापिकाओं को पूरा वेतन नहीं मिलता । आज भी नगरों और महानगरों में ऐसे कई अध्यापक या अध्यापिकाएँ मिलते हैं जिन्हें उनके वेतनमान से कम वेतन दिया जाता है । "कथा-सूर्यकी नयी यात्रा" में कुछ लोग हिन्दी साहित्य के मठाधीशों के रात-दिन चक्कर काटते रहते हैं, ताकि उन्हें कहीं स्कूल - कॉलेज में नौकरी मिल जाय ।

आवास की समस्या :

मकान की समस्या नगरीय जीवनकी एक प्रमुख समस्या है । गुजराती में एक कहावत है -- "शहेर माँ रोटलो मले पण ओटलो न मले ।" अर्थात् शहर में एक बार खाना मिल सकता हैं, पर रहनेकी व्यवस्था मुश्किल है । शहरों में हवा एवं रोशनीदार मकानों का अभाव होता है । कुछ मकान तो ऐसे होते हैं, जहाँ दिन में भी बल्ब जलाना पड़ता है । कई लोग सड़क के किनारे, गन्दी नालियों के किनारे अनधिकृत ढंगसे झोपड़ियाँ बनाकर रहते हैं । बम्बई, कलकत्ता जैसे महानगरों में मीलों लम्बी झोंपड़पट्टियाँ दृष्टिगोचर होती हैं । कई महानगरो में एक-एक कमरे में 10-15 व्यक्ति तक रहते हैं । इन मकानों में पाखाने और पेशाब घरों की उचित व्यवस्था भी नहीं होती । अत: यह शहरी मकान बीमारियों के गढ़ होते हैं ।

मराठी में "माहिम ची झोंपड़पट्टी" और जयंत दलवी कृत "चक्र" उपन्यास मिलते हैं जो बम्बई के झोंपड़पट्टी के परिवेश को उसके यथार्थरूप में चित्रित करते हैं । उर्दू के लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकार ने भी बम्बई के इस घृणित जीवन को अपने उपन्यासों तथा कहानियों में चित्रित किया है । के. अब्बास की एक फिल्म "शहर और सपना" भी इसी विषय को लेकर फिल्मायी गई थी । पर हिन्दी में ज़िन्दगी के इस अभिशप्त अछूते पक्ष को उसके सही परिप्रेक्ष्य में संभवत: जगदम्बाप्रसाद, दीक्षित कृत "मुरदाघर" में ही उजागर किया गया है । वैसे आंशिक रूप में इसका चित्रण शैलेश मटियानी के "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई", "बोरीवली से बोरीबन्दर" जैसे उपन्यासों में भी उपलब्ध होता है । "अन्धेरे बन्द कमरे" में कस्साबपुरा की बस्तीका

चित्रण मिलता है । मकान की इस समस्या का चित्रण " यह भी नहीं", "मकान की इस समस्याका चित्रण "यह भी नहीं", "प्रश्न और मरीचिका", "नदी फिर बह चली", "किस लिए", "अठारह सूरजके पौधे", "तीसरा आदमी" प्रभृति उपन्यासों में भी मिलता है ।

महीपसिंह कृत "यह भी नहीं" उपन्यास में बम्बई में मकान की समस्या के कारण देश के विभिन्न कोणों से आये हुए लोग खार स्थित ग्रीन होटल के अलग-अलग कमरों में रहते हैं । ऐसा नहीं है कि ये लोग कुछ दिन के लिए वहाँ ठहरे हुए हैं । मकान के उभाव के कारण ये महीनों-बरसों से वहाँ रह रहे हैं । "प्रश्न और मरीचिका" में बम्बई और दिल्ली दोनों महानगरों के परिवेश को लिया गया है । यहाँ भी गन्दी बस्तियाँ और झोपड़पटियों का आंशिक चित्रण मिलता है । "नदी फिर बह चली" में पटना की गन्दी और सस्ती बस्तियों का यथार्थ अंकन हुआ है । "किस लिए" में दिल्ली की एक मध्यवर्गीय चालका वर्णन मिलता है जहाँ लोग गन्दे और शीलन भरे स्थानों में बह रहे हैं । "अठारह सूरज के पौधे" का नायक अपने सारे कार्य-कलाप ट्रेन में ही करता है । नियमित पोस्ट मिलती रहे उसके लिए उसने एक खाट किराये पर ले रखी है, जहाँ हफ्ते में दो एक बार वह जाता है । "मुरदाघर" में मरियम के बच्चे का जन्म "पाईप" में होता है ।

कमलेश्वर के "तीसरा आदमी" की समस्या के मूलमें आवास की समस्या है । उपन्यास का नायक अपनी पत्नी के साथ दिल्ली की एक अन्धेरी गली के एक छोटे-से कमरे में अपने ममेरे भाई के साथ रहता है । दिल्ली में मकान न मिलने के कारण ही उसे अपने ममेरे भाई के साथ रहना पड़ता है, जहाँ

उनके दाम्पत्य जीवन की दावारों को आशंका की धुन लगने लगती है और अन्तत: वे दीवारें ही ढह जाती हैं । उपन्यास के मुख पृष्ठ पर घोषित किया गया है कि "प्रेम और प्रति द्वन्द्विता के नाते तीसरा आदमी आदिकाल से स्त्री और पुरूष के बीच आता रहा है, लेकिन कमलेश्वर का तीसरा आदमी आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों की उपज हैं ।"[21]

एक कमरे में रहने के कारण उपन्यास का नायक नरेश अपनी अनुपस्थिति में पत्नी चित्रा और भाई सुमन्त की उपस्थिति को लेकर सदैव चिंतित एवं शंकाकुल रहात है । चित्रा के आस-पास मँडराती सुमन्त की यह छाया नरेश को पागल-सा बना देती है । उसके ही शब्दों में -- "रातमें .....जब मैं चित्रा को अपनी बाँहों में लेता हूँ तो एक अजनबी गन्ध फूटती थी । वह छाया मँडराती हुई कहीं से आती थी और मुझसे पहले उसकी बाँहों को जकड़ लेती थी ..... जब मैं उसकी बाँहों पर हाथ रखता तो वहाँ दो हाथ पहले से मौजूद होते थे ।"[22]

वस्तुत: आज के मध्यवर्गीय परिवारमें किसी भी वस्तु पर किसी का पूर्णाधिकार नहीं होता । यहाँ कपड़े-लत्ते, चप्पल, कमरे सब "कोमन" होते हैं, तो पत्नी पर भी पूर्णाधिकार कैसे प्राप्त हो सकता है ? वहाँ पत्नी भी सबकी जरूरतों में से एक होती है । परिवारके बीच पत्नी के साथ एकान्त का अभाव खलता है, तो परिवार से बाहर पत्नी का किसी अन्य से बढ़ता एकान्त मन और आत्मा पर एक भारी बोझ डाल देता है । इस प्रकार "तीसरा आदमी" में दिल्ली के निम्न - मध्यवर्गीय परिवेश को, छोटे-छोटे कमरों के दड़बों में सड़ती हुई जिन्दगी की तस्वीर को पेश किया गया है ।

ऐसा नहीं है कि शहरों में मकान नहीं मिलते । ड्राइंग रूम, कीचन, बाथ-रूम एटेच्ड बेडरूम, स्टोर-रूम आदि सुविधाओं सहित मकान मिलते हैं, पर किराया इतना होता है कि उसे देने के बाद शायद मध्यवर्गके व्यक्ति को किचन-बीचन की आवश्यकता ही न रहे ।

"अन्धेरे बन्द कमरे", "प्रश्न और मरीचिका", "सीमाएँ टूटती है", "रेखा", "एक पतिके नोट्स", "मछली मरी हुई" प्रभृति उपन्यासों में महानगरों के वैभव, ऐश्वर्य एवं उच्चवर्गीय जीवन का चित्रांकन हुआ है । अत: आवास की यह समस्या भी आर्थिक - असंतुलन का परिणाम है ।

बाल-अपराध की समस्या (Juvenile Delinquency)

बाल अपराध सामाजिक और वैयक्तिक विघटन का परिणाम है, इस अर्थ में यह एक सामाजिक समस्या हैं, किन्तु उसके मूलमें औद्योगीकरण, शहरीकरण, आर्थिक-विषमता, गरीबी और बेकारी है, इस अर्थ में वह एक आर्थिक समस्या भी है । बाल-अपराध विज्ञान एक अलग विज्ञानके रूपमें स्थापित हो चुका है । यह समाज-विज्ञान की एक शाखा है जो बच्चों के समाज-विरोधी व्यवहार का अध्ययन करती है । बच्चों में थोड़ा नटखटपना होना स्वाभाविक है, किन्तु जब यह नटखटपन सामाजिक मान्यताओं को भंग करने लगता है, तब उसे बाल-अपराध के नाम से जाना जाता है । पश्चिमी देशों में द्रुतगामी औद्योगीकरण के प्रभावों से सामाजिक संरचना एवं सामाजिक मूल्यों में कई परिवर्तन आए हैं, जिसके परिणामस्वरूप वहाँ बाल-अपराध की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है । भारतीय समाज में ग्रामीण विशेषताएँ व्याप्त थीं, किन्तु अब शहरों के विकास एवं ग्रामीण

जनता का शहरों की ओर आगमन तथा संयुक्त परिवार के विघटन से नियंत्रण में शिथिलता आयी है तथा पड़ौस का प्रभाव भी अब क्षीण हो गया है । कुछ समय पूर्व तक परिवार द्वारा प्राप्त सामाजिक और आर्थिक सहायता के अतिरिक्त जो मानसिक सुरक्षा मिलती थी वह भी अब कम होती जा रही है । आर्थिक अभावों के कारण बच्चों की उचित देख-रेख नहीं हो पाती और उचित समाजीकरण के अभाव में बच्चा समाज-विरोधी हो जाता है । वर्तमान समयमें भारत में, विशेषत: शहरों में, बाल अपराध की समस्या दिनों दिन गम्भीर होती जा रही है जिसके निदान की तुरन्त आवश्यकता है ।

गाँवों की तुलना में बाल-अपराध शहरों में अधिक होते हैं । शहरी क्षेत्रों में भी बड़े-बड़े शहर जैसे दिल्ली, मद्रास, बम्बई, कलकत्ता, कानपुर आदिमें बाल-अपराध अधिक होते हैं । शहरों में बाल-अपराध होने के कई कारण हैं किन्तु इन सबके मूलमें आर्थिक-अभाव मुख्य है । जैसे जहाँ माता एवं पिता दोनों ही काम पर चले जाते हैं तो घरमें बच्चों पर नियंत्रण रखनेवाला कोई नहीं होता, तब वे आवारा गर्दी करने लगते हैं । प्रसिद्ध बाल-अपराध मनोवैज्ञानिक न्यूमेयर महोदय लिखते हैं -- "With the father on a night shift and mother on a day shift or both on day or night shifts, children were often on the 'street shift'."[23] अर्थात् जब पिता रातमें काम करते हैं और माता दिनमें अथवा दोनों रात या दिन में काम करते हैं, तो बच्चे प्राय: गलियों में ही काम करते हुए मिलते हैं । शहरों में बच्चों से तस्कर व्यापार, वेश्यावृत्ति, भीख, दारूका व्यवसाय आदि कार्यों में सहायता ली

जाती है । इसमें प्राय: निम्नवर्ग के बच्चो को या अपहृत बच्चों को लगाया जाता है । शहरका भीड़-भाड़ युक्त वातावरण, गन्दी वस्तियाँ, अश्लील एवं अपराधी चल-चित्र, अति संपन्नता के प्रति आक्रोश, बेकारी एवं नितान्त गरीबी आदि बाल-अपराध को प्रोत्साहित करते हैं ।

शिक्षितों की तुलना में अशिक्षित बालकों में अपराध वृत्ति अधिक पायी जाती है । इण्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 1979 के अनुसार भारत में पकड़े गये बाल-अपराधियों में से 48 % अशिक्षित 34·6 % प्राथमिक शिक्षा से निम्न श्रेणी के तथा 11·5 % हायर सेकण्डरी से कम शिक्षा - प्राप्त थे ।[24]

कई अध्ययन इस बातको प्रकट करते हैं कि गरीबी ने बच्चों को अपराधी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । बच्चों की आवश्यकताएँ जब परिवार में पूरी नहीं होती तब वे घर या बाहर चोरियाँ करने लगते हैं । निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति होने पर बच्चों में हीनता की भावना पैदा होती है । जोन्स महोदय के शब्दों में -- "ज्यों - ज्यों आर्थिक स्तर निम्न होगा, त्यों - त्यों बाल - अपराध की दर ऊँची होगी ।"[25]

अपने यहाँ कहावत है - बुभुक्ष: किं न करोति पापं -- अर्थात् भूखा आदमी कौनसा पाप नहीं करता ? उसके लिए नैतिक आदर्श कोई मूल्य नहीं रखते । अंग्रेजी में कहा गया है -- A hungry stomach knows no morals ।

गरीबी के कारण परिवार अपनी मौलिक आवश्यकताएँ, चिकित्सा एवं मनोरंजन की सुविधाएँ नहीं जुटा पाता । ऐसी स्थिति में बाहर की चकाचौंध बच्चे के मानसिक - संतुलन को बिगाड़ सकती है ।

जगदम्बाप्रसाद दीक्षित के उपन्यास "मुरदाघर" में जिस नितान्त गरीबी का चित्रण है, उसमें बच्चों को बाल-अपराधी बनाने के सारे उपकरण मौजूद हैं । इस बस्ती में सस्ती वेश्याएँ है, शराबी, जुआरी, मवाली पति हैं, इसमें किस्तय्या जैसे शराबवाले - मटकावाले पुलिस को किश्तें देकर गरीब मजदूरों का खून चुसते हैं, इसमें पोपट जैसे पति हैं जो जुआ खेलने के लिए अपनी ही पत्नी को वेश्या बनने पर विवश करते हैं और यही भिनभिनाती मक्खियों से गन्या, राजु, मुहम्मद, गोपू, सोन्या जैसे बच्चे हैं जो होटलकी जूठन के कचरे में रोटी, पाऊँ या हड्डीका एकाध टुकडा ढूँढने के लिए कुत्तो की तरह परस्पर झपटते रहते हैं ।

वस्त्र के अभाव में एकान्त में नहाते असहाय दीन-हीन मनुष्य पर हँसने और पत्थर फेंकने में उन्हें आनन्द का अनुभव होता है । इससे उनके विकृत मानस का पता चलता है ।

कुंठित मानसिकता एवं यौन-क्षुधा से पीड़ित बुढे समलैंगिकता (homo-sexuality) की ओर अग्रसर होते हैं । ऐसे बुढे आर्थिक अभावों में पलनेवाले बच्चों को पैसे या मिठाई की लालच देकर अपने पास बुलाते हैं । "शहर में घूमता आईना" में चेतने के पिता शादीराम और अमीचन्द के मामा सोहनलाल को बुढापे में भी सुन्दर लड़के की आवश्यकता रहती थी, जो उनके बिस्तर को गरम करे । ऐसे बच्चे हीनता-ग्रंथि के शिकार होकर, अन्तत: अपराधों की ओर झुकते हैं ।

अपराध (crime) की समस्या :

ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अपराधकी वृत्ति अधिक पायी जाती है । प्रत्येक समाज अपनी सामाजिक संरचना, संस्कृति एवं सभ्यता तथा मानव की मूलभूत आवश्यकताओं के अनुसार कुछ नियमों, रूढियों, सामाजिक मानदण्डों को विकसित करता है । इनमें से कुछ के विपरीत आचरण करने पर निंदा की जाती है, कुछ का उल्लंघन अनैतिक माना जाता है, तो कुछ प्रतिमानों के विरुद्ध कार्य करने पर समाज या सरकार द्वारा कठोर दंड भी जाता है । इस प्रकार समाज द्वारा स्वीकृत मानदण्डों के विपरीत आचरण अपराध है । इलियट और मेरिल के अनुसार "समाज विरोधी व्यवहार जो कि समूह द्वारा अस्वीकार किया जाता है और जिसके लिए समूह दण्ड निर्धारितकरण है, अपराध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ।"[26] काल्डवेल महोदय के अनुसार -- " अपराध किसी निश्चित स्थान व समय पर संगठित समाज - सम्मत मूल्यों के संग्रहका उल्लघन है ।"[27] साधारणत: यदि कोई किसी की हत्या कर दे तो उस हत्यारे को मृत्यु दंड या आजीवन कारावासकी सज़ा दी जाती है, जब कि युद्ध मे अधिकाधिक दुश्मनों को मारनेवाले को राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है । जाति के बाहर विवाह करना कभी अपराध माना जाता था, परंतु आज नहीं । सती-प्रथा, बाल-विवाह और दहेज-प्रथा किसी समय उचित व्यवहार माने जाते थे, किन्तु आज ये व्यवहार कानून की दृष्टिसे दण्डनीय अपराध माने जाते हैं ।

अधिकांश अपराधों के मूल में आर्थिक-परिस्थितियाँ ही उत्तरदायी होती हैं । डच विद्वान एवं समाजशास्त्री विलियम बोंगर के अनुसार उसके सर्वेक्षण के अधिकांश अपराधी गरीब वर्ग के थे ।[28] कार्लमार्क्स और एँजिल्स ने

भी गरीबी को अपराध का कारण माना है । उनका मत है कि आर्थिक विषमता ही अपराध को जन्म देती है । यह सिद्धान्त कुछ सीमा तक सही भी है क्योंकि आर्थिक असुरक्षा, वस्त्रों की कमी, बेकारी, चिकित्सा सुविधाओं का अभाव आदि अपराधी मनोवृत्ति को जन्म देने में सहायक हैं । गन्दी बस्तियों में रहनेवाले लोगों के अध्ययन इस बातके प्रमाण प्रस्तुत करते हैं ।

आलोच्य कालके नगरीय परिवेश के उपन्यासों में भी शहरी क्षेत्रों में पाये जानेवाले अपराधोंका चित्रण मिलता है । "मुरदाघर" का पोपट उसका एक ज्वलंत उदाहरण है । वह गरीब है, अशिक्षित है, बेकार है । अत: पत्नी से वेश्यावृत्ति करवाता है । वह रातोंरात हाजी सेठकी तरह अमीर हो जाना चाहता है । अत: पत्नीकी कमाई को जुओ में उड़ा देता है । एक स्थान पर वह अपनी पत्नी मैना को समझाता है :- "हमाली करेंगा तो क्या मिलेंगा •• •• कुछ नई । आक्खा जिन्दगानी इधरिच सड़ना पडेंगा । मजूरी करके आज तलक कौन खोली लिया है और कौन मकान बाँधा है । जो लोग कल तक कंगाल था ••••• आज लाखोपती बन गया । पोलिस का जो साब कल जलक उसकू हवालातमें बन्द करता था ••••• आज वोई उसकू सलाम करता है ••• उसका साथ मुरगा खाता ••••. दारू पीता •••• और मैं तेरे कू बोलता मैना •••• मै भी करके बताएँगा ••••देख लेना तू । वो हाजी उमर कू जानती क्या तू ? •••• मेरा साथ हवालात में था एक टेम । पहला दारू का धंधा किया । जभी पइसा कमाया थोड़ा ••• तो रंडीका होटल चालू किया । थोड़ा और पइसा कमाया । पीछू दान चोरी का काम चालू किया ••••• इस्मलिंग । पाँच सालके अन्दर बन गया लाखोपति । बड़ा-बड़ा बिल्डींग है उसका ।

पोलिस का सब बड़ा साब लोग कू पार्टी देता ••• बड़ा•••• बड़ा मिनिस्टर लोग उसकू अपना घर कू बुलाता । समझी क्या ?"[29]

इसी उपन्यासका जब्बार एक स्मगलर के यहाँ बड़ा हाथ मारता है । क्योंकि वह अपनी पत्नी तथा बच्चे को उस दोज़ख से निकाल कर किसी अच्छे स्थान पर ले जाना चाहता है ।

सबहिं नचावत राम गोसाई" का सेठ राधेश्याम मंत्री जबरसिंह की सहायता से स्मगलिंग मे करोडों रूपये कमाता है । ऐसे लोग अपने व्यवसाय तथा सुरक्षाके लिए गुण्डों को पालते हैं और ये गुण्डे अपराधों के साम्राज्य को और बढ़ाते हैं ।

"प्रश्न और मरीचिका" तथा "अमृत और विष" में भी गुंडाइज्म तथा अपराधों का चित्रण मिलता है । मनोहरश्याम जोशी के उपन्यास "कुरु - कुरु स्वाहा" में भी बम्बई के अपराधी जगत का परिचय दिया गया है । "शहर में घूमता आईना" में बिल्ला, जगना, देवू, प्यारू जैसे जालन्धर के मशहूर गुण्डोंका यथार्थ चित्रण लेखक ने किया है । सस्ती अश्लील फिल्मों ने भी इस अपराध-वृत्ति को हवा देने में बड़ा योग दिया है । रज़ा के उपन्यास "दिल एक सादा कागज" तथा "टोपी शुक्ला" में भी नगरीय जीवन में व्याप्त अपराध-वृत्ति का यथातथ्य चित्रण हुआ है । महीपसिंह के "यह भी नही" तथा शैलेश मटियानी के "रामकली" तथा "बोरवली से बोरीबन्दर" उपन्यास मे भी गुण्डों के आतक का चित्रण मिलता है ।

वेश्यावृत्ति § Prostitution § की समस्या :

यह समस्या सामाजिक भी है और आर्थिक भी । कभी-कभी वह मनोवैज्ञानिक भी होती है । प्राचीन कालसे हमारे समाजमें इसका प्रचलन मिलता है । इस सम्बन्ध में जियोप्रे का मत है -- "वेश्यावृत्ति विश्व का सब से पुराना व्यवसाय है और यह तभी से चला आ रहा है जब से कि समाज के लोगों की काम-भावनाओं को विवाह और परिवार में सीमित किया गया है ।"[30]

भारत में ही नहीं वरन् यूनान व जापान में भी "हीटरी" और "गीशा" के रूप में वेश्यावृत्ति का प्रचलन रहा है । सिंगापुर में पैसे खर्चने पर ऐसी लडकियाँ मिल जाती है जो मसाज के द्वारा सेक्सका आनन्द देती हैं -- "My interest in body contact as a means of sexual stimulation was triggered by reading about a type of erotic stimulation practised by singapore girls, The man lies down and the woman runs her fingers along his body from the toes to the armpits in a tickling or rubbing motion, lightly at first, emphasining the more erogeneous zones between the legs, armpits and spine. This motion gradually becomes more pronounced with more pressure. As her hands travels up inside the legs she goes under the testicles and passes her fingers over them lightly. A particularly sensitive spot is the area behind the testicles. She graduates the pressure according to her partner's reactions. If she knowns her job well he should have a good erection and she can pass her fingers lightly along his penis and proceed to kissing and licking his body in its most sensitive parts. If he is getting

near bursting point she can transfer to another sensitive part of his body giving him gentle massage. In this way she can keep him simmering for as long as she likes."[31]

और यह सारा कार्य-कलाप मसाज के नाम पर होता है । वस्तुत: यह भी एक प्रकार की वेश्यावृत्ति है ।

वेश्यावृत्ति को पुरूष पक्षमें यौन तृप्ति का एक विकृत एवं घृणित साधन माना गया है । इससे व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक पतन होता है । इसके कारण उसे आर्थिक हानि उठानी पड़ती है तथा उसके पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन में जहर धुल जाता है । स्त्री के पक्ष में वेश्यावृत्ति अधिकांशत: आर्थिक कारणों से पायी जाती है ।

वेश्यावृत्ति को परिभाषित करते हुए इलियट तथा मैरिल लिखते है : "वेश्यावृत्ति एक भेद-रहित और धनके लिए स्थापित किया गया अवैध यौन सम्बन्ध है जिसमें भावात्मक उदासीनता होती है ।"[32] जियोफ्रेके अनुसार — "वेश्यावृत्ति आदतन या कभी-कभी बिना किसी भेदभाव के हर व्यक्ति के साथ धन के लिए किया गया लैंगिक सहवास है ।"[33] हेवलोक एलिस के अनुसार, "वेश्या वह जो अपने शरीर को बिना किसी विकल्प (Choice) के पैसों के लिए कई लोगों को मुक्त रूपसे उपलब्ध कराती है ।"[34] बोंगरका मत है कि "वे स्त्रियां वेश्याएँ हैं जो अपने शरीर को यौन-क्रियाओं के लिए बेचती हैं । और इसे एक व्यवसाय बना लेती हैं ।"[35]

"मुरदाघर" में पायी जानेवाली मैना, पार्वती, लैला, जमना, मरियम, बशीरन, नूरन, हीरा, जमिला जैसी स्त्रियाँ वेश्याएँ हैं । यहाँ वेश्यावृत्ति का मूल कारण गरीबी है, अत: कई बार वे एक-एक दो-दो रूपये में भी अपने

शरीरका सौदा करती हैं । एक स्थान पर एक टैक्सीवाला नूरन से भाव-तक करता है -- "रात भरका क्या लेगी ? ····कुछ जाती है {नूरन} । फिर मज़ाक किया साले ने । ····· नई ····· रात भर नई जगती मैं ····· । रात - भर नई जगती ···· फुसफुसाता है टैक्सीवाला ······· तो पाँच रूपया काहेका माँगती तू । ····· अब नहीं होता सब । चिल्लाती है ······ तेरी माँ ठुकाने माँगती पाँच रूपये में ······ ऐ ····· मूँ सम्हाल के बात कर ···· हो गया फैसला । बेकार गयी घंटे-भर की घिसघिस । तेरे कू मालुम तो है कायका पाँच रूपया माँगती मैं ···· फिर कायकू पूछता तू ।

उक्त सवाद से उनकी गरीबी और परिवेश का पूर्णतया परिचय मिलता है । "नदी फिर बह चली" में पटना की गन्दी सस्ती बस्तियों की वेश्याओं का चित्रण मिलता है । मोल-तोल के समय में वे औरतें कहा करती है -- "एक बार बैठोगे या दो बार ? ····· दो बार बैठोगे तो चार रूपये ही देना । आठ आने छोड़ दूँगी ।"[38]

श्रवणकुमार गोस्वामी के उपन्यास "प्रेत" में भी ऐसी एक वेश्याका चित्रण मिलता है । "अठारह सूरज के पौधे" में नायक पठानकोट चला जाता है । वहाँ इधर-उधर के भटकाव तथा सस्ती वेश्याओं के संग उसके कुछ दिन तो गुजर जाते हैं, परन्तु एक दिन वह किसी रूपजीवी के नग्न शरीरको प्रकाश में देखता है । वहाँ वह जो देखता है, उसे झेल पाना उसके लिए बड़ा कठिन हो जाता है और अन्तत: वह वहाँ से भी भागता है ।

कमलेश्वर के उपन्यास "आगामी अतीत" में कार्सियांग के वेश्यालय का सजीव चित्रण हुआ है । वेश्याओं की बातचीत, उनकी भाषा, गंदे इशारे,

बीडी पीनेकी स्टाइल आदिसे उनके सस्तेपन का परिचय मिलता है ।

विभिन्न आधारों को लेकर वेश्याओं को भी वर्गीकृत किया जा सकता है । इनमें से कुछ प्रमुख प्रकार निम्नाकित है :-

:1: प्रकट समूह : जहाँ प्रकट रूप से वेश्याएँ समूह में रहती हैं और वेश्यालय चलाती हैं । ऊपर जिन उपन्यासों की चर्चा हुई है उनमे इस प्रकारकी वेश्याएँ मिलती हैं । शहरों में ऐसे क्षेत्रको "लाल रोशनी क्षेत्र" { Red Light Area } कहते हैं । बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली जैसे महानगरों में ऐसे क्षेत्र निश्चित होते हैं ।

:2: अप्रकट समूह : इनमें वे वेश्याएँ होती हैं जो चोरी-छिपे वेश्यावृत्ति करती है । ऐसी स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति के साथ अन्य व्यवसाय भी करती है । "छाया मत छूना मन" की परवीन और कंचन इस वर्ग के अंतर्गत आती हैं । "नदी फिर बह चली" में ऐसी गृहस्थित औरतों का भी जिक्र है जो फीस पर चलती हैं । दस बजे रात को दलाल ले जाता है और भोर होते ही पहुँचा जाता है ।[38]

:3: काल गर्ल्स एवं होटल वेश्याएँ : इस प्रकार की वेश्याएँ शराब घरों, होटलों, कैबरे स्थलों नाचघरों तथा क्लबों में जाकर धंधा करती हैं । उन्हें पहचानना सरल नहीं होता । बड़े-बड़े शहरों में उच्च घरों की लड़कियाँ एवं स्त्रियाँ भी यह कार्य अपने अतिरिक्त मौज-शौक एव खर्चे के लिए करती हैं । कालेज की जो लड़कियाँ कीमती शराबें और ड्रग्स की लत में पड़ जाती हैं वे भी अपनी जरूरतें पूरी करती हैं । "छाया छूना मन" की कंचन और "यह भी नहीं" की शाता तथा पदमा इस वर्गकी वेश्याएं हैं । "मछली मरी हुई" की कल्याणी भी इसी वर्ग में आयेगी ।

:4: रखैल वेश्याएँ : कई विवाहित पुरूष पत्नी के अतिरिक्त भी किसी स्त्रीसे अपने अवैध यौन-सम्बन्ध रखते हैं। उस स्त्रीके भरण - पोषणकी जिम्मेदारी उसी की होती है। बड़े-बड़े सेठ, उच्च अधिकारी, स्मगलर, डकैत आदि अपनी रखैल § Kept § रखते हैं। इन्हें हम व्यक्तिगत वेश्या भी कह सकते हैं। शिवानी कृत "कृष्णकली" की मुनीर नेपाल के राणा की रखैल थी। नेपाल के राणा के अतिरिक्त लाट साहब के हब्शी नौकर रौबी और लाटसाहब के ए•डी•सी• रोबर्टसन से भी उसके सम्बन्ध थे। मुनीर की पुत्री पन्ना विद्युतरंजन मजूमदार की रखैल बनती है। "डाक बंगला" की इरा भी कुछ समय के लिए मि• बतरा की रखैल का रोल निभाती है। "मुक्तिबोध" की नीलिमा, 6रेखा" की देवकी, "प्रश्न और मरीचिका" की केसरबाई प्रभृति औरतें इस वर्गमें आती हैं।

:5: वंशानुगत वेश्याएँ : कई वेश्याएँ वंशानुगत होती हैं। वंशानुगत वेश्यावृत्ति मुगलकाल की देन है। इस प्रकार की वेश्याएँ माँ से पुत्री को अपना धन्धा हस्तान्तरित करती हैं। जब वे पहली बार लड़की को इस व्यवसाय में प्रवेश कराती हैं, तो एक समारोह का आयोजन होता है, जिसे नथ उतारने का उत्सव कहते हैं। "कृष्णकली" की मुनीर, माणिक प्रभृति इस प्रकार की वेश्याएँ हैं। लक्ष्मीनारायण लाल कृत "बड़ी चम्पा, छोटी चम्पा" की वेश्याएँ भी इस कोटि में आती हैं। वे अहिल्या की पूजा करती है।

:6: परिस्थितिजन्य वेश्याएँ : गरीबी, वैधव्य, बेकारी, बेमेल विवाह, बाल-विवाह, बलात्कार, अनाथ स्थिति, फुसला कर भगा ले जाकर फिर इस व्यवसाय में डाल देना, अपहरण करके समर्पण के लिए दबाव प्रभृति कारणों से कई बार स्त्रियों वेश्याएँ बन जाती हैं। "मुरदाघर" तथा "नदी फिर

बह चली" की प्राय: वेश्याएँ ऐसी हैं । "आगामी अतीत" की चाँदनी पर बलात्कार होता है । इस बलात्कार के कारण उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और वह कार्सियांग के वेश्यालय मे आ जाती है । "मुरदाघर" की मैना को पोपट बहला-फुसलाकर इस व्यवसाय मे डाल देता है । एक स्थान पर मैना के आक्रोश भरे कथन में यह बात स्पष्ट हो जाती है -- "कब होंगा तेरा वो एकच धंधा ? मेरी मैयत का पीछू ? सुबू से चूलहा नहीं जला । शाम से कुतिया का माफ़क रौंड मारती । एक घराक नहीं मिलता मर गये सब के सब । रोज ऐसाइच । मैं क्या जिनावर हूँ बोलना । क्या बोला था तू .... चाली में खोली ले के देऊँगा .... दो बख्त का रोटी .... लुगडा ...... बिलाउज ..... सुनीमा ले के जाऊँगा .... ये करूँगा ..... वो करूँगा ..... किधर गया वो सब ?"[39]

वर्तमान समय में स्त्रियों द्वारा नौकरी किये जाने के कारण कई बार वे आफिस में अपने बॉस के हाथों फँस जाती है । दूकानों, होटलो, कार्यालयो, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, क्लबों आदि सभी स्थानों पर बिक्री बढ़ाने की दृष्टि से सैल्समैन एवं रिसेप्सनिस्ट के रूप में नव युवतियों को रखा जाता है । कई बार इन पदों पर काम करने के लिए उन्हें अपना शरीर तक बेचना पड़ता है । "डाक बंगला" की "इरा", "मुक्ति बोध" की नीलिमा, "प्रश्न और मरीचिका" की सोकी, "छाया मत छूना मन" की वसुधा, "कृष्ण कली" की वाणीसेन, आदि इस प्रकार की स्त्रियाँ हैं ।

:7: <u>उच्च एवं विलासी जीवन व्यतित करने के मोह के कारण बनी हुई वेश्याएं</u> : वर्तमान समय में भौतिक सुख सुविधाएँ बढ़ी है । प्रत्येक स्त्री यह चाहती है कि उसके पास कार, फ्रीज, टेलिविजन, अच्छा मकान, क़ीमती वस्त्र, फर्नीचर एवं जेवर आदि हो । ये सभी भौतिक सुख-सुविधाएँ अपनी

कम आय में जुटा पाना कठिन होता है । ऐसी स्थितिमें कई स्त्रियाँ न्यूड-फोटो खिंचवाना, ब्लू फिल्मों में काम करना, कालगर्ल, केरियर गर्ल्स जैसे वेश्यावृति के व्यवसाय अपना लेती हैं । "छाया मत छूना मन" की कंचन, "प्रश्न और मरीचिका" की सोकी, "मुक्तिबोध" की नीलिमा, "दिल एक सादा कागज़" की चम्पा आदि इस उच्च एवं विलासी जीवन के लिए वेश्यावृत्ति को अपनाती हैं । "प्रश्न और मरीचिका" में एक स्थान पर अमरीकी संपन्नताका बड़ा वीभत्स चित्र मिलता है । सोकी के कथनानुसार वहाँ लोगों के पास मकान, कार, फर्नीचर, आदि सब होता है, किन्तु कर्ज पर लिया हुआ जिनकी किश्तों को चुकाने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों को नौकरी करनी पड़ती है और कई बार इस नौकरी के दौर में उन्हें विवशता वश दूसरों के साथ सोना भी पड़ता है ।[40]

:8: अपराधी एवं पिछड़ी जातियों व जनजातियों की वेश्याएँ : कई जातियाँ एवं जनजातियाँ ऐसी हैं जिनमें स्त्रियों और लड़कियों से वेश्यावृत्ति करायी जाती है । कई घुम्मक्कड़ जन जातियों की स्त्रियों यह कार्य करती हैं । इनमें, नट, बेरिया, वसावी, कंजर, साँसी आदि प्रमुख हैं । रामकुमार भ्रमर कृत "काँच घर" और मणि मधुकर कृत "सफेद मेमने" में इसका चित्रण मिलता है ।

:9: धार्मिक वेश्याएँ :

प्राचीन काल से ही भारत में देवदासी प्रथा प्रचलित रही है जिनमें युवा लड़कियाँ मन्दिरों को सौंप दी जाती हैं । ये लड़कियाँ मन्दिर में गायन तथा नृत्यका कार्य करती थी । इन्हे "भगतनियों" के नामसे भी

जानते हैं। मन्दिर के कुछ पूजारी आदि इन देवदासियों का उपभोग करते हैं। नागार्जुन के उपन्यास "इमरतिया" की गौरी, माई इमरतीदास, लक्ष्मी आदि सधुआईनों को इस कोटि में रख सकते हैं।

अत: वेश्यावृत्ति के लिए प्रमुख कारण आर्थिक ही रहा है। जब स्त्रियों अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति अन्य साधनों से करने में असमर्थ होती हैं, तब वे वेश्यावृत्ति अपना लेती हैं। कम आय एवं गरीबी प्रकट अथवा चोरी-छिपे रूप में लड़कियों को वेश्यावृत्ति करने के लिए विवश करती हैं। माता-पिता की बच्चों के लालन-पालन की असमर्थता, जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की लालसा, अच्छा खाने-पीने और फैशन से रहने के लिए धन की आवश्यकता होती है, जिसे वेश्यावृत्ति के द्वारा सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। लीग ऑफ नेशन्स एडवाइज़री कमिटि का मत हैं कि "गरीबी, कम स्थान, और भीड़ तथा कम आय आदि कुछ ऐसे कारण हैं जिनके कारण औरतें वेश्यावृत्ति करती हैं।"[41]

लीग ऑफ नेशन के द्वारा विभिन्न देशों में की गयी जाँच से ज्ञात हुआ कि "भूख वेश्यावृत्ति की आधार शिला है -- The foundation of Prostitution of hunger -- और गरीबी वेश्यावृत्ति का प्रमुख कारण है।[42] डॉ॰ पुनेकरने बम्बईके अपने सर्वेक्षण में 72 / मामलों में वेश्यावृत्ति के लिए गरीबी को ही उत्तरदायी बताया।[43]

अपने यहाँ Male prostitution कम देखने में आता है, किन्तु धन-प्राप्ति के लिए कुछ अच्छे शरीर-सौष्ठव वाले पुरुष कई बार उच्च वर्ग की महिलाओं की यौन-तृप्ति करते रहते हैं। शैलेश मटियानी के उपन्यास "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई" मे इस बातका संकेत नर्मदाबेन सेठानी के कथन में

मिलता है -- "एक खन्ना था .... पैंजाबी । उससे मैंने अपनी वासना पूर्ति की । यह सौदा सिर्फ इस लिए एक दिन केन्सल हो गया कि मैं उसे लेकर दो बार "आस्ट्रिया" में गई, पर पैसे सिर्फ एक बार दिए । मैं ने फिर देने की बात कही, तो कहने लगा, कि मैं तो "एडवान्स" लिया करता हूँ ..... तो वह खन्ना .... वह "स्पेशल वर्कर" बनकर खादी का झोला कन्धे पर डाल बड़े-बड़े घरों में जाता है ...... और मुझ जैसी औरतों की नब्ज पहचानता हैं । ...... एक दिन मैं उसके साथ होटल गई, जब शामको भी "सीक्रेट-रूम" लेने की इच्छा मैं ने प्रकट की, तो वह खन्ना बोला -- "मैं मजदूर नहीं हूँ । इस बिल्डिंग को बनाए रखना मेरी बिजनेस का पहला उसूल है ।" और उसने बड़ी बेशर्मी से अपने शरीर पर हाथ फेरा ।"[44]

<u>जुआ, मद्यपान एवं मादक-द्रव्यों के व्यसन की समस्या</u> : आर्थिक विषम परिस्थितियाँ एवं भीषण गरीबी, सामाजिक अपर्याप्तता (**Social Inadeguacy**), गन्दी बस्ती और मनोरंजन के साधनों का अभाव अज्ञानता प्रभृति कारणों से भारतीय नगरों में मद्यपान एवं जुए की समस्या मिलती है ।

भारत में ही नहीं वरन् विश्व के लगभग सभी देशों में नशीली वस्तुओं पर करोडों रूपये खर्च होते हैं । शराबका प्रयोग मानव-संस्कृति के साथ पिछले हजारों वर्षों से जुड़ा हुआ है । अमरीका में 70 / पुरूष और 60 / स्त्रियों नियमित रूप से शराब को सेवन करते हैं ।[45] पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से भारत में भी शराब पीना एक फैशन-सा हो गया हैं । परन्तु इस उच्च-वर्ग में जो शराब पी जाती है, उसकी गणना आर्थिक-समस्या

के अन्तर्गत नहीं होगी । निम्न तबके लोग जो देशी शराब ठर्रा, फ्रेन्च पोलिस, ताड़ी इत्यादि पीते हैं, वह वस्तुत: आर्थिक समस्या है ।

"मुरदाघर" की गन्दी बस्ती में किस्तय्या दारू और जुए का अड्डा चलाता है । मजदूर लोग जो दिनभर महेनत-मजदूरी कर थोड़ा बहुत कमाते हैं, उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा उसके पास चला जाता है । मैना का पति पोपट भी पक्का शराबी व जुआरी है । अपना शरीर बेचकर मैना जो कमाती है, उसका अधिकांश हिस्सा वह शराब और जुए में उड़ा देता है । उसे स्वप्न में भी वरली-मटका के आँकड़े दिखते हैं । एक स्थान पर वह कहता है -- "मैं सच्ची बोलता मैना । आज मेरा सपना झूटा नई होगा । मैं देखा कि ••• वो अपना हाजी सेठ नहीं क्या •••••वो मेरे कू बुलाया ••• उधर पोलिस का बड़ा साब भी होता । वो मेरे से हाथ मिलाया । पीछू उधर एक बाजू से बीस हवालदार आया और दूसरा बाजू से पचीस हवालदार आया । मैं सच्ची बोलता मैना ••••। मैं खुद गिना ••• बीस और पच्चीस •••••। सब मेरे कू सलाम किया ••••• बीस और पचीस ••••दुए से मेंडी ••••• दुए से पजा । आज लड़ी आनाज मँगता । आज मेरा सपना झूटा नई होगा ....। मैं सच्ची बोलता ।"[46] इसी उपन्यास में आठ आनेवाले घिसे-पिटे ताश से छोटे-छोटे बच्चे दो-दो बीड़ियोंका जुआ खेलते हैं -- "सत्तार । दो बीड़ी और मँगता मेरे कू । ये टैम सारा बीड़ी वापिस कर देऊँगा ••••• पेला पीछू का वापिस कर । गन्या •••••• मादरचोद पत्ता देख के खेलते क्या । गाँडू ••••• ऐसा मारेगा लात । तू खेल दे महादेव •••• बिनधास •••• हाय रे । क्या पत्ता खेला है मेरी जान कुरबान जाऊँ । चल रे मेरे शेर ••• इसकी मैं मा की ••••• ।"[47]

उक्त संवादों से उनकी सामाजिक - आर्थिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है ।

"नदी फिर बह चली" का जगलाल पटना की एक ट्रान्सपोर्ट कम्पनीमें ट्रक-ड्राइवर है । दूसरे ड्राइवर्स एवं क्लीनर्स की सोहबत में उसे भी शराब, जुए और रण्डीबाजी की लत लग जाती है । एक दिन इसीमें एक वेश्याकी कोठरी के आगे शराब के नशे में धुत्त होकर अपने साथी के पेटमें छुरा भोंक देता है । उसे जेल हो जाती है । उसकी पत्नी परबतिया असहाय हो जाती है । शानी कृत "साँप और सीढ़ी" के हीरा सिंहका पैतृक व्यवसाय कपड़ा बुनने का था, परंतु उधर आये औद्योगीकरण के कारण उसका करघा ठप्प पड़ गया । सलपी-ताड़ी के व्यवसाय में हीरा सिंह ऐसा डूबा कि अन्ततः उसीमें उसका स्वास्थ्य एवं जीवन चौपट हो गया ।

उक्त उपन्यासों के अतिरिक्त "प्रश्न और मरीचिका", "अन्धेरे बन्द कमरे", "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई", "रामकली", "बोरीवली से बोरीबन्दर", प्रभृति उपन्यासों में इस सामाजिक-आर्थिक समस्या का चित्रण मिलता है ।

शराब और जुए से भी अधिक भयानक एक बदी इधर शहरों में प्लेग की तरह फैल रही है । दूरदर्शन की "अन्धी गलियाँ" और "सुबह" जैसी सीरियलों में उसका चित्रण हुआ है । उसका कुछ संकेत "मछली मरी हुई", "नंगा शहर" तथा "छाया मत छूना मन" जैसे उपन्यासों में मिलता है । वह बदी है ड्रग्स की । हेरोइन, ब्राउन सुगर, एल.एस.डी. मारीजुआना, स्मैक आदि इसके विविध नाम हैं । महानगरों में छोटे-छोटे बच्चे तक इसके शिकार हो रहे हैं । इसकी लत पड़ने पर व्यक्ति उसे पाने के लिए कुछ भी कर सकता है । बच्चों से अवैध काम कराने के लिए उनमें यह आदत डाली

जाती है । निर्धन और गरीब बच्चे इसमें फँसते हैं । कॉलेजों के छात्र-छात्राओं में भी इसका प्रचलन बढ़ रहा है । "गोबर गणेश", "लाल-पीली जमीन" आदि उपन्यासों में जिन होस्टलों का चित्रण है, उनमें भी यह बदी पायी जाती है ।

अर्थाभाव के कारण अपनी अभिरूचि के विपरीत व्यवसाय के चुनाव की समस्या :

आर्थिक विपन्नता के कारण मध्यवर्गीय युवक अपनी अभिरूचि के व्यवसाय को चुनने में सर्वथा असफल रहते हैं । "प्रश्न और मरीचिका" का उदयराज भारत सरकार में उच्च पद पर विराजित एक आई॰सी॰एस॰ आफिसर का लड़का है, अत: उसे दिल्ली आते ही बढ़िया Job मिल जाता है । मि॰ सराफ उसे एक बढ़िया ऑफर देते हैं तब मि॰ नायडू कहते है -- "मिस्टर सराफ, ज्वाइंट सेक्रेटरी और महीने - दो महीने में सेक्रेटरी बननेवाले मिस्टर उपाध्याय के लड़के के लिए यह ठीक नहीं होगा कि वह आपकी नौकरी करे ।"[48] और फिर उदयराज की ओर घूमकर वे कहते हैं -- "हिन्दुस्तान में रहकर अब तुम्हारे लिए आगे पढ़ना बेकार है । दो साल के लिए तुम इंगलैंड हो आओ, वहाँ आक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज की डिग्री महत्वपूर्ण होगी । वैसे तुम किसी कम्पिटीटिव इक्जामिनेशन में बैठ सकते हो । मै तुम्हें फॉरेन स्टडीज़ के लिए स्कालरशिप दिलाने के लिए शिक्षा विभाग से व्यवस्था कर दूँगा ।"[49]

इस प्रकार साधन - संपन्न व्यक्ति तो अपनी अभिरूचि के क्षेत्र का चुनाव कर लेता है, बल्कि कहना चाहिये कि उच्च क्षेत्र ही उनका चुनाव कर लेते हैं, परन्तु मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय युवक को ऐसी स्वतंत्रता कहाँ ।

वह बनना चाहता है डॉक्टर, पर स्थितियाँ उसे बना देती है क्लर्क । "गोबर गणेश" का विनायक बुद्धि-प्रतिभा में अपने किसी साथी से कम नहीं है, परन्तु घरकी आर्थिक दुर्व्यवस्था के कारण आई•ए•एस• में नहीं बैठ सकता । उससे कम बुद्धि - प्रतिभावाले दूसरे साधन-संपन्न लड़के पढ़-लिखकर ऊँचे ओहदों पर पहुँच जाते है, जब कि उसे स्कूल-टीचरी करनी पड़ती है । "शहर में घूमता आईना" के चेतन की भी यही व्यथा है । एक स्थान पर चेतन सोचता है -- "अमरनाथ जिसे स्कूलमें लेखक के नाते कोई जानता ही न था, साहिबे किताब हो गया, और वह जो अपने आपको कवि, लेखक, उपन्यासकार और न जाने क्या-क्या समझता था, यों ही लण्डूरा घूमता है ।"[50]

रमाकान्त कृत उपन्यास "छोटे-छोटे महायुद्ध" में इस आर्थिक-विषमता की तिक्तता को बखुबी उभारा है । लल्लन बाबू एक क्लर्क है । उनका पुत्र राजेन प्रतिभा संपन्न है, परन्तु घरकी आर्थिक विवशताओं के कारण अपने अरमानों का गला घोंटकर उसे क्लर्क बनना पड़ता है । "दिल एक सादा कागज़" का रफ़्फ़न और "टोपी शुक्ला" का टोपी भी इसके ज्वलंत - उदाहरण हैं ।

बदी उज्ज़मॉं कृत "एक चूहे की मौत" तो इसी समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है । चित्रकार को क्लर्की करनी पड़ती है । साहित्य में अभिरूचि रखनेवाले व्यक्ति को ऑफिस की फाइलों ⟨चूहों⟩ से सर खपाना पड़ता है । तात्पर्य कि मध्यवर्गीय एवं निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति को हमारे यहाँ चुनाव का कोई अधिकार नहीं । सब कुछ उस पर थोपा जाता है, बीबी और नौकरी भी ।

निष्कर्ष :

अध्याय के समग्रा लोचन से हम निम्नांकित तथ्यों तक पहुँच सकते हैं :

:1: हमारी बहुत-सी सामाजिक समस्याओं का उत्स आर्थिक-विषमता एवं आर्थिक - असंतुलन है ।

:2: वर्तमान स्त्री-शिक्षा के सन्दर्भ ने नारी को घर से स्वतंत्र, परंतु बाहर से परतंत्र बना दिया है ।

:3: गरीबी की समस्या निम्नवर्ग, निम्न मध्यवर्ग, मध्यवर्ग तथा उच्च मध्यवर्ग के लोगों को अलग - अलग तरह से प्रभावित करती है । निम्न एवं निम्न मध्यवर्ग में गरीबी की समस्या उन्हें अपराधी व विकृत बना देती है । मध्यवर्गीय व्यक्ति आर्थिक-अभावों में कुंठित हो जाता है ।

:4: नगरीय परिवेश के उपन्यासों में बेकारी की समस्या, मकानों की समस्या, बाल-अपराध की समस्या, अपराध की समस्या, वेश्यावृत्ति की समस्या तथा जुआ, शराब और मादक द्रव्यों के सेवन आदि की समस्याएँ मिलती हैं । इन सभी समस्याओं का प्राय: अर्थ से गहरा सम्बन्ध है ।

THE M. S. HANSA MEHTA LIBRARY ... UNIVERSITY

सन्दर्भ

1 "अमृत और विष" : पृ॰ 689 ।

2 "अधूरे साक्षात्कार" : पृ॰ 144 ।

3 "हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा": पृ॰ 143 ।

4 "हिन्दी उपन्यास : उत्तरशती की उपलब्धियां" : पृ॰ 206 ।

5 "राग दरबारी" : पृ॰ 214 ।

6 दृष्टव्य : "साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास" : पृ॰ 163 ।

7 "मुरदाघर" : पृ॰ 61 ।

8 "पडी है मरियम । दिन गिन रही है । कब निकलेगा पेट में से ।" : "मुरदाघर" : पृ॰ 37 ।

9 वही : पृ॰ 111 ।

10 वही : पृ॰ 160 ।

11 "नदी फिर बह चली" : पृ॰ 278 ।

12 "अमृत और विष" : पृ॰ 65 ।

13 वैसे "सुखदा" सन् 1960 से पूर्व का उपन्यास है, किन्तु यहाँ लाल का कथन आप के परिवेश मे भी उतना ही उपयुक्त होने के कारण उद्धृत किया गया है ।

14 "सुखदा" : 93 ।

15 "भारतीय सामाजिक समस्याएँ" : एम॰एल॰गुप्ता, डी॰डी॰ शर्मा : पृ॰ 199 ।

16 "छाया मत छूना मन" : पृ॰ 6 ।

17 "राग दरबारी" : पृ० 11 ।

18 वही : पृ० 423 ।

19 वही : पृ० 424 ।

20 "दिल एक सादा कागज़" : पृ० 64 ।

21 प्रकाशकीय वक्तव्य से ।

22 "तीसरा आदमी" : पृ० 82 ।

23 'Juvenile Delinquency in Modern Society' : M.H. Newmeyer : P. 161.

24 Indian Journal of Public Administration, 1979, PP.63

25 "All one can say is that the lower the economic grade, the higher the percentage of Juvenile Delinquency." : I.A.E. Jones : Juvenile Delinquency and Law : P.29.

26 "Crime may be defined as anti-social behaviour which the group rejects and to which it attaches penalties." :Social Disorganization : Elliott & Merrill : PP. 542-43.

27 "Crime is the violational of set values acceptable to organized society at a certain time and in a given place."
: Criminology : Caldwell : P. 4.

28 'Criminology and Economic conditions' : W.A.Bouger P. 643.

29 "मुर्दाघर" : पृ० 22-23 ।

30 'Encyclopaedia of Social Sciences' 1935 : Prostitution, P. 545.

31 'The Sex Life File' : S.J. Tuffill : P. 77-78.

32 'Prostitution is an illicit sex union on a promiscueus and mercenary basis with accompanying emotional indifference.' : Elliott & Merrill : Social Disorganization : 1950 : p. 155.

33 'Prostitution is the practice of habitual, intermittent sexual Union, more or less promiscuous for mercenary inducement." : May Geoffrey : 'Encyclopaedia of Social Sciences, Vol. XI-XII, : P.553.

34 "Prostitute is one who openly abandones her body to a number of men without choice for money." : Harelock Ellis : Sex in Relation to society : P. 155.

35 'Those women are prostitutes who shell their bodies for the excercise of sexual acts and make of this a profession." : Bonger : Criminality and Economic Conditions : P. 152.

36 "मुरदाघर" : पृ॰ 39 ।

37 "नदी फिर बह चली" : पृ॰ 203 ।

38 "वही: पृ॰ 260 ।

39 "मुरदाघर" : पृ॰ 21 ।

40 "प्रश्न और मरीचिका" : पृ॰ 218-219 ।

41 Committee Report Part-III, Method of Rehabilitation of Adult prostitutes : P. 7.

42 The 30th Report of Committee on Social and Moral Hygiene : 1958 : P. 101.

43 &A Study of Prostitutes in Bombay : Dr. D.S. Punekar : 1962 : P. 235.

44 "किससा नर्मदाबेन गंगूबाई" : पृ. 92 ।

45 'Social Disorganization' : Elliott & Merrill : P.196.

46 "मुरदाघर" : पृ. 27 ।

47 वही : पृ. 31 ।

48 "प्रश्न और मरीचिका" : पृ.43 ।

49 वही: पृ. 43 ।

50 "शहर में घूमता आईना": पृ. 408 ।

. . . . .